देह के बन्धन से मुक्त होकर चलो अपने वतन
जानो अपना सत्य रूप तुम हो अनमोल रतन
ज्ञान प्रकाश फैलाकर अज्ञान अँधेरा हरने वाले
ब्राह्मण जीवन अपनाकर विकारों से मरने वाले
अपने मन में जलाकर स्व परिवर्तन की ज्वाला
हर रोज डालते रहो उसमें ज्ञान घृत का प्याला
परिवर्तन की ज्वाला में अवगुण सभी जलाना
अपनी हर कर्मेन्द्रिय को श्रीमत प्रमाण चलाना
अपनी जीवन नैया कर दे खेवनहार के हवाले
छंट जाएंगे तेरे जीवन से दुःख के बादल काले
करो भरोसा बाबा पर वो नई दुनिया बनाता है
हमारे अवगुण हरकर गुणों से हमें सजाता है
जगा लो मन में बाबा के प्रति सच्चा विश्वास
पूरी कर देगा वो हमारे मन में जागी हर आस
ॐ शांति